पाठ 20. ऋतुएँ रंग-बिरंगी

पाठ का परिचय

गरमी का मौसम हमें बहुत दुखदायी लगता है क्योंकि आग की तरह जलाने वाली गरमी किसी को भी अच्छी नहीं लगती। गरमी में यदि कुछ अच्छा लगता है तो वह है ठंडा-ठंडा पानी व शरबत। यदि गरमी नहीं पड़ती तो शरबत का आनंद भी हमें कहाँ लेने को मिलता। गरमी के बाद दूसरी ऋतु आती है, वर्षा। तपती धरती वर्षा का बेसब्री से इंतज़ार करती है। काले-काले बादल छाकर धरती के मन को ही नहीं मनुष्य के मन को भी आनंद से भर देते हैं। वर्षा जाने के बाद सर्दी आती है। यह ऋतु सभी को बहुत अच्छी लगती है क्योंकि इस मौसम में गुड़, गन्ना खाने का एक अलग ही आनंद है। जाती हुई सर्दी पतझड़ को लाती है, वृक्षों को अपने पत्तों से अलग कर दुख दे जाती है। जंगल की सारी सुंदरता समाप्त हो जाती है। लेकिन पतझड़ के जाते ही बसंत का मौसम आता है और सारा माहौल सँवर जाता है। धरती दुलहन की तरह सज जाती है और उसका कोना-कोना महक उठता है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

प्रकृति परिवर्तनशील है। परिवर्तन दूसरों के लिए लाती है। हर परिवर्तन के साथ कुछ न कुछ नया देकर जाती है। जीवन में परिवर्तन व नयापन आवश्यक होता है। प्रकृति से परोपकार की भावना को अवश्य सीखना चाहिए।

महत्वपूर्ण चर्चा

ऋतुओं के भिन्न-भिन्न रंगों के बारे में बच्चों से चर्चा करें।

- गरमी के मौसम में क्या-क्या होता है तथा इसे कोई पसंद क्यों नहीं करता?
- वर्षा से किसे और कितना फ़ायदा होता है?
- सर्दी का मौसम सबसे अच्छा क्यों होता है?
- पतझड़ व वसंत ऋतु के बारे में भी चर्चा करें।
- ऋतुओं का बदलना क्यों आवश्यक है?
- ऋतुओं से होने वाले लाभ क्या-क्या हैं?